Sahaja Yoga Central Committee of India
(Formed as per instructions given on July 20, 2008 by Mataji Shree Nirmala Devi, after Guru Puja)

Her Holiness Mataji Shree Nirmala Devi
(Founder of Sahaja Yoga)

communications@syccindia.org www.syccindia.org

सहज योग सेंट्रल कमिटी ऑफ इंडिया (एस वाई सी सी आई)
की ओर से संदेश
परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी के बच्चों की वास्तविक स्थिति

प्रिय भाइयों और बहनों,

"जय श्री माताजी"

भूमिका:

क) हाल ही में, एक यूरोपीय सहज योगी द्वारा 'सहज योग सेंट्रल कमेटी ऑफ इंडिया' (एस वाई सी सी आई) और 'लाइफ़ इटरनल ट्रस्ट, मुंबई' को एक ईमेल भेजा गया था। यह ईमेल, परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी के बच्चों की वास्तविक स्थिति से संबंधित विषय पर था। यह ईमेल स्वयं स्पष्ट है और इसे 'परिशिष्ट अ' के रूप में संलग्न किया गया है।

ख) इसके अलावा, हमें यह भी ज्ञात हुआ कि एक वरिष्ठ सहज योगी और एक भारतीय सहज योग ट्रस्ट के पूर्व-ट्रस्टी को कुछ साल पहले यह टिप्पणी करते हुए सुना गया था कि श्री माताजी की केवल एक ही बेटी का जन्म हुआ था और एक को गोद लिया गया था। हाल ही में, उसी सहज योगी को यह कहते हुए सुना गया कि श्रीमती साधना वर्मा ही श्री माताजी की एकमात्र असली बेटी हैं। पिछले कुछ महीनों में यह बातचीत और भी बढ़ गई है और सहज सामूहिकता में काफी फैल गई है।

इसी पृष्ठभूमि में, हमने यह निर्णय लिया है कि उठाए गए महत्वपूर्ण और गंभीर प्रश्नों को स्पष्ट करने के लिए यह संचार जारी किया जाए, ताकि सहज योग के इतिहास को, भविष्य की पीढ़ियों के सभी सहजयोगियों द्वारा, सही दृष्टिकोण से देखा जा सके।

ग) **हमारा अवलोकन:**

१) हमें श्री माताजी के चार ऐसे अमृत वाणी मिली है, जो इस विषय पर स्पष्ट रूप से प्रकाश डालते हैं:

i) "जैसा कि आप जानते हैं, मेरे पूरे विश्व में बहुत से बच्चे हैं— उसके अलावा, **एक जिसे मैंने वास्तव में शारीरिक रूप से जन्म दिया है**।"
जन्मदिन पूजा, सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) 21 मार्च 1983 .
https://www.amruta.org/1983/03/21/birthday-puja-1983/

इस अमृत वाणी की मूल लिखित प्रतिलिपि (ट्रांसक्रिप्ट) में शब्द "जिन्हें" (अंग्रेजी में "वन्स") लिखा हुआ था; हम अमृता टीम को धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने तुरंत सुधार करते हुए, इस प्रति में शब्द "जिन्हें" (अंग्रेजी में "वन्स") को बदलकर "जिसे" (अंग्रेजी में "वन") कर दिया।

ट्रांसक्रिप्ट में यह साफ़ तौर पर कहा गया है कि श्री माताजी ने शारीरिक रूप से केवल एक ही संतान को जन्म दिया। श्री माताजी संवाद में पारंगत थीं, उनके शब्दों या उनके द्वारा व्यक्त किए जाने वाले अर्थ पर कोई संदेह नहीं कर सकता।

ii) "लेकिन कैसे वे लोग, जो बिल्कुल निचले स्तर पर थे, जिन्होंने देश के लिए कुछ भी नहीं किया, देश के लिए कोई बलिदान नहीं दिया, अचानक ऊपर आ गए, और सारे अच्छे लोग नीचे चले गए? यदि आप शिवाजी महाराज, राणा प्रताप या शालिवाहन के इतिहास को पढ़ें, तो आपको आश्चर्य होगा कि वे किस प्रकार शक्ति की उपासना करते थे। सभी क्षत्रिय शक्ति की पूजा करते थे, और वे एक सीमा तक जाते थे और उससे आगे नहीं बढ़ते थे। एक सीमा तक, जहाँ तक धर्म बना रहता था। उस इतिहास को मैं आपसे दोहरा नहीं सकती। लेकिन सूक्ष्म रूप से ऐसा महसूस होता है कि इस विभाजन ने अचानक लोगों के दृष्टिकोण को बदल दिया, या यूँ कहें कि जो लोग बहुत निम्न स्तर पर थे, वे ऊपर आ गए।
मुझे याद है मैं उस समय यहीं थी, विभाजन के समय, और मेरी शादी हो चुकी थी; तभी तीन लोग मेरे पास आए। **मैं बाहर बगीचे में बैठी थी, और अपने बच्चे के लिए कुछ बुन रही थी, क्योंकि मैं उन दिनों गर्भवती थी**।
तो वे आए, उन्होंने मेरी तरफ देखा और पूछा, 'क्या हमें आपके घर में एक कमरा मिल सकता है?' मैंने कहा, 'क्यों नहीं? मेरे पास जगह है। यह मेरे पिता का बहुत बड़ा घर है। मैं आपको ज़रूर दूँगी।'"
श्री राजलक्ष्मी पूजा, नई दिल्ली (भारत), 4 दिसंबर 1994.

https://www.amruta.org/1994/12/04/shri-raja-lakshmi-puja-delhi-1994/

iii) "मैं आपको अपने जीवन का एक सरल उदाहरण दूँगी, जिससे आपको समझ में आएगा कि प्रेम कैसे काम करता है। मैं शुरू से, और अंत तक भी एक गृहिणी ही रही हूँ, मुझे ऐसा लगता है।**एक बार मैं दिल्ली में थी; मेरी बेटी का जन्म होने वाला था, इसलिए मैं लॉन में बाहर बैठकर उसके लिए कुछ बुन रही थी।** तभी तीन लोग घर में आए—एक महिला और दो पुरुष। वे आए और बोले, "देखिए, हम... मैं एक गृहिणी हूँ, और ये दो लोग—एक मेरे पति हैं और दूसरे मेरे पति के दोस्त हैं (जो कि एक मुसलमान हैं)—हम आपके पास पनाह लेने आए हैं, क्योंकि हम शरणार्थी हैं।" मैंने उनकी तरफ देखा; वे मुझे बहुत अच्छे लगे, वे बिल्कुल ठीक-ठाक लग रहे थे। मैंने कहा, "ठीक है, आप कृपया मेरे घर में आराम से रह सकते हैं।"
श्री फ़ातिमा पूजा, स्विट्ज़रलैंड, 14 अगस्त 1988.
https://www.amruta.org/1988/08/14/shri-fatima-puja-switzerland-1988/

iv) "मेरी अपनी ननद मेरे पति के बजाय मुझसे ज़्यादा जुड़ी हुई थीं, और इसकी वजह यही थी कि मैं हमेशा उसे, यहाँ तक कि अपने पति से भी बचाती थी हालाँकि वे उनके भाई हैं—मेरा मतलब है, ज़ाहिर है कि वे एक-दूसरे के बहुत करीब हैं—लेकिन आपको उनके हितों की रक्षा, उस हद तक करनी चाहिए। फिर अपने नौकरों की रक्षा करें, उन लोगों की रक्षा करें जो आपके घर आते हैं। यह उनका फ़र्ज़ है। अगर ऐसा करती है, तो वह इसे बहुत अच्छी तरह से कर सकती है।"
"अब, मैं आपको अपने जीवन का ही एक उदाहरण देती हूँ। मैं दिल्ली में थी, और उस समय वह परेशानी शुरू हो गई थी जिसे आप 'विभाजन' कहते हैं। और, बहुत से लोग इधर-उधर भाग रहे थे। और, एक बार मैं अपने पिता के घर के बाहर बैठी हुई थी; **मैं बुनाई कर रही थी। क्योंकि कल्पना का जन्म होने वाला था, और मैं बाहर बैठकर बुनाई कर रही थी।** तभी एक महिला मेरे पास आई और उसने कहा, 'हम शरणार्थी हैं; हमारे पास जाने के लिए कोई जगह नहीं है। क्या आप मुझे अपने घर में थोड़ी-सी जगह दे पाएँगी?' मैंने कहा, 'ठीक है।' मेरे पिता का घर बहुत बड़ा था। मैंने कहा, यह इतना बड़ा घर है! हमारे पास बाहर की तरफ़ एक कमरा है जिसका आप इस्तेमाल कर सकती हैं; साथ ही, वहाँ एक रसोई और एक बाथरूम भी है। आप वहीं रह सकती हैं।"
दिवाली पूजा, लंदन (इंग्लैंड) 27 अक्टूबर 1981
https://www.amruta.org/1981/10/27/diwali-talk-lakshmi-principle-london-1981/

श्री माताजी के उपरोक्त अमृत वाणी स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि यह कल्पना दीदी ही थीं, जिन्हें श्री माताजी ने 1947 में जन्म दिया था, जब भारत विभाजन के दौर से गुज़र रहा था (नोट: कल्पना दीदी की जन्म तिथि 22 दिसंबर, 1947 है)। तीन अलग-अलग भाषणों में, श्री माताजी कल्पना दीदी के जन्म के बारे में बताती हैं। वे कहती हैं कि विभाजन के समय वे बुनाई कर रही थीं—अपने बच्चे के लिए बुन रही थीं, क्योंकि वे गर्भवती थीं, क्योंकि कल्पना का जन्म होने वाला था।

v) स्वर्गीय श्रीमती शशिकला मेश्राम (श्री माताजी की सबसे छोटी बहन और संकल्प मेश्राम की माताजी) का वर्ष 2008 में इटली में लिया गया एक वीडियो भी मौजूद है, जिसमें वे कल्पना दीदी के जन्म के विषय में विस्तारपूर्वक चर्चा करती हैं। इसका लिखित विवरण (ट्रांसक्रिप्ट) नीचे दिया गया है:

"शशिकला: मैं स्कूल में थी, और **जब कल्पना का जन्म हुआ—22 दिसंबर की शाम को ग्वालियर में**—तब मैं मैट्रिकुलेशन कर रही थी, यानी अपनी स्कूली पढ़ाई पूरी कर रही थी। तो उसका जन्म २२ दिसंबर को शाम 6 बजकर 3 मिनट पर हुआ था; उस समय बहुत ज़्यादा ठंड थी। और मेरी बहन (माँ) थोड़ी बेहोश सी थी, क्योंकि उसे बहुत ज़्यादा ब्लीडिंग (खून बहना) वगैरह हो रही थी। तो मेरी माँ पूरे दिन उसके साथ रहीं, और मेरी बड़ी बहन भी। जब मुझसे कहा गया—और जिस वार्ड को उसके लिए रिज़र्व किया गया था, वह उस समय... हम्म... मतलब, इस्तेमाल करने लायक नहीं था। तो उस रात नर्स ने मुझसे वहीं बैठने को कहा; उसने मुझे एक छोटी सी दरी या सतरंजी जैसी कोई चीज़ दी। वह कुछ इस तरह की थी...
सहज योगिनी: एक शॉल (स्टोल) जैसी?
सहज योगी: नहीं, कपड़े के एक टुकड़े जैसी।
सहज योगिनी: आह... ठीक है।
शशिकला: और... **उन्होंने कल्पना को मेरी गोद में रख दिया; वह बिल्कुल अभी-अभी जन्मी थी।** और उसके सिर का आकार कुछ इस तरह का था।
सहज योगिनी: एक शंकु (कोन) जैसा, हाँ... हाँ।
शशिकला: और नर्स ने कहा, "बस तुम इसे धीरे-धीरे थपथपाती रहो।" तो पूरी रात मैं जागती रही, उसे अपनी गोद में लिए हुए... उस कड़ाके की ठंड में।

और सुबह होते-होते उसका सिर गोल हो गया। बस उसी पल मुझे उससे प्यार हो गया।
सहज योगिनी: हाँ... हाँ... सचमुच खास।
शशिकला: जैसे ही मेरी परीक्षा खत्म हुई, मैं तुरंत दिल्ली चली गई; वे लोग उस समय दिल्ली में ही रह रहे थे। और फिर 1950 में साधना का जन्म हुआ। अब 2010 में वह 60 साल की हो जाएगी। उसे हमेशा यही चाहिए होता था कि उसे भी उतना ही प्यार मिले और हर चीज़ वैसी ही मिले, जैसी कल्पना को मिलती थी।
और वह जाकर पड़ोसियों से कहती थी—जब वे हमारे साथ रह रहे थे—तो वह जाकर पड़ोसियों से कहती थी, "यह जो मेरी मौसी हैं—शशि मौसी (वह उन्हें इसी नाम से पुकारती थी)—कहती है कि यह मुझसे उतना ही प्यार करती हैं, जितना कि दीदी से, यानी कल्पना से। लेकिन असल में मुझे लगता है कि वह मुझसे कम प्यार करती हैं, और दीदी से ज़्यादा। वह बहुत प्यारी थी।"

vi) सभी सहज योगी इस बात की पुष्टि करेंगे कि कल्पना दीदी का चेहरा, श्री माताजी के चेहरे से बहुत हद तक मिलता-जुलता है। हमने सैकड़ों सहज योगियों को इस बात का ज़िक्र करते हुए सुना है, जब वे सार्वजनिक रूप से कल्पना दीदी से मिलते हैं। इसके अलावा, कल्पना दीदी के चलने का अंदाज़ भी श्री माताजी के चलने के अंदाज़ से काफ़ी मिलता-जुलता है।

निष्कर्ष:
हम सभी सहज योगियों के लिए, जो श्री माताजी के शिष्य हैं, उनका हर शब्द परम सत्य है। हम सहज योगी श्री माताजी द्वारा कहे गए हर शब्द पर विश्वास करते हैं और उसे स्वीकारते हैं - कि कल्पना दीदी श्री माताजी के रक्त से संबंधित हैं और वे उनकी पुत्री हैं।

श्री माताजी के वचनों में यह स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि:
• उन्होंने एक संतान को जन्म दिया।
• विभाजन (1947) के दौरान, वे कल्पना दीदी की माँ बनने वाली थीं, जिनके लिए वे बुनाई कर रही थीं। कल्पना दीदी का जन्म 22 दिसंबर 1947 को हुआ था।

श्री माताजी के उपरोक्त वचनों और श्रीमती शशिकला के वीडियो साक्ष्य से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि:
• श्री माताजी ने शारीरिक रूप से एक संतान को जन्म दिया - कल्पना दीदी को।
• कल्पना दीदी वास्तव में श्री माताजी से ही जन्मी संतान हैं।

सभी सहज योगी जानते हैं कि श्री माताजी द्वारा बोले गए प्रत्येक शब्द का हर एक सहज योगी के लिए अत्यंत महत्व है। उन्हें मालूम था कि हम सहज योगियों के लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि उन्होंने केवल एक संतान को जन्म दिया - कल्पना दीदी को।

सहज योग सेंट्रल कमिटी ऑफ इंडिया
2 मई, 2026

परिशिष्ट अ

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी की संतानों की वास्तविक स्थिति के संबंध में एक यूरोपीय सहज योगी का ईमेल।

“हाल ही में, सिडनी – 1983 में आयोजित ‘जन्मदिन पूजा’ को सुनते समय, मैंने श्री माताजी को यह कहते हुए सुना:

"जैसा कि आप जानते हैं, दुनिया भर में मेरे बहुत से बच्चे हैं—**उसके अलावा, जिसे मैंने वास्तव में अपने शरीर से जन्म दिया है**। आज हमें उन सभी लोगों के बारे में सोचना चाहिए जो हमसे हज़ारों मील दूर हैं, और जो अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं।"
अमृता पर पूरा भाषण देखें:
https://www.amruta.org/1983/03/21/birthday-puja-1983/
जब मैंने बाद में उस भाषण का लिखित रूप (ट्रांसक्रिप्ट) पढ़ा, तो मैंने देखा कि उस वाक्यांश को इस तरह लिखा गया था: "**उनके अलावा, जिन्हें** मैंने वास्तव में अपने शरीर से जन्म दिया है।" मैंने उस ट्रांसक्राइबर (लिखने वाले) से संपर्क किया, क्योंकि मेरा मानना है कि माँ के भाषणों में हमेशा **उनके कहे हुए सटीक शब्द** ही होने चाहिए। हमारे बीच बातचीत होने के तुरंत बाद ही, 'निर्मला विद्या अमृता टीम' ने उस गलती को पहचान लिया और उसे ठीक कर दिया।

लेकिन, श्री माताजी के शब्दों का चुनाव मेरे मन में बस गया। जैसा कि हम जानते हैं, उनका बोला हर शब्द अर्थपूर्ण होता था और कभी भी यूं ही नहीं कहा जाता था। मैं सोच रहा था कि क्या उनके इस कथन—"जिसे मैंने वास्तव में शारीरिक रूप से जन्म दिया है"—का कोई ऐसा संदर्भ या पृष्ठभूमि है, जो हमें इस बात को बेहतर ढंग से समझने में मदद कर सके।

भविष्य की पीढ़ियों के लिए अवतारों के जीवन का सटीक दस्तावेज़ीकरण अत्यंत महत्वपूर्ण होने के कारण, ताकि वैसी कोई गलतफहमी या विकृति उत्पन्न न हो जैसी कि अतीत में पृथ्वी पर अवतरित हुए ईश्वर के पिछले स्वरूपों के साथ हुई थी, मेरा मानना है कि इस विषय की स्पष्ट व्याख्या को भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित करना अत्यंत मूल्यवान होगा।“